: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना

(नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का रचनात्मक अभियान)

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

हमारे आत्मीय बंधु,

सप्रेम नमस्कार !

माँ गायत्री की कृपा से सपरिवार स्वस्थ व सानंद होंगे। आज मनुष्य समाज के भय, संत्रास, निराशा, ईर्ष्या, द्वेष एवं अहिंसात्मक विषाक्त वातावरण में बड़ी कठिन परिस्थितियों में समय गुजार रहा है। धन-वैभव, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा भी उसे सुख-शांति प्रदान करने में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। इन भयाक्रांत परिस्थितियों में मनुष्य को जीवन जीने की सही दिशा देने, निराशा को आशा में बदलने, संतोष प्रदान कर सुख-शांति का जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करने में ऋषियों का चिंतन ही समर्थ है। ऐसे विचारों का संकलन युग ऋषि परमपूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा संपादित मासिक पत्रिका अखण्ड ज्योति के सन् १९४० से १९६६ तक के अंकों से उनकी प्रखर लेखनी से उद्धृत अंशों को संकलित कर एक अनुपम, अद्भुत, नित्य पठनीय एवं उपहार में देने योग्य रंगीन छपाई वाला अत्यंत सुंदर ४०० पृष्ठों का ग्रंथ प्रकाशित किया गया है। इसका चित्र मुख पृष्ठ पर दिया गया है। इसके एक पृष्ठ का स्वाध्याय प्रतिदिन किया जाय एवं उसका चिंतन-मनन करके उसे व्यवहार में उतारा जाय। परिजनों से अनुरोध है कि यह ग्रंथ अधिकाधिक संख्या में घर-घर स्थापित कराया जाय। परिवार में सबको हमारा स्नेह एवं बच्चों को प्यार पहुँचे।

आपका भाई

(लीलापत शर्मा)

व्यवस्थापक-युग निर्माण योजना, मथुरा-३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि के चिंतन को घर-घर पहुँचाएँ

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है-मानव जीवन में सुख की वृद्धि करने के उपायों में स्वाध्याय एक प्रमुख उपाय है । स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है । मन में महानता, आचरण में पवित्रता और आत्मा में प्रकाश आता है । स्वाध्याय एक प्रकार की साधना है, जो अपने साधक को सिद्धि के द्वार तक पहुँचाती है । जीवन को सफल, उत्कृष्ट एवं पवित्र बनाने के लिए स्वाध्याय की बड़ी आवश्यकता है । स्वाध्याय के अभाव में कोई भी व्यक्ति महान अथवा ज्ञानवान नहीं बन सकता । प्रतिदिन नियम पूर्वक सद्ग्रंथों का अध्ययन करते रहने से बुद्धि तीव्र होती है, विवेक बढ़ता है और अंत:करण की शुद्धि होती है । इसका व्यावहारिक कारण यह है कि सद्ग्रंथों के अध्ययन करते समय मन उनमें रमा रहता है । ग्रंथ के सद्विचार उस पर संस्कार डालते रहते हैं । वे माता पिता धन्य हैं जो अपनी संतान के लिए उत्तम पुस्तकों का एक संग्रह छोड़ जाते हैं, क्योंकि धन, संपत्ति, साधन और सामग्री तो एक दिन नष्ट होकर मनुष्य को अपने भार में डुबो भी सकती है, किंतु उत्तम पुस्तकों के सहारे मनुष्य भवसागर की लहरों में भी सरलता से तैरकर उसे पार कर सकता है ।

पुस्तकें कमरे को सजाने के लिए तथा प्रदर्शनी लगाने के लिए न खरीदी जाएँ, वरन् उनका नियमित अध्ययन जीवन के अन्य अनिवार्य कार्यों की तरह ही होना चाहिए । स्वाध्याय को अपने दैनिक जीवन का एक अनिवार्य अंग बना लेना चाहिए । पुस्तकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की उपयोगिता अध्ययन से ही है, अन्यथा वे कीड़ों का भोजन बनने के सिवा कुछ नहीं करतीं । नई पुस्तकें खरीदना, उनका अध्ययन करना, उनको अधिकाधिक उपयोग में लाना ही पुस्तकों का सच्चा सम्मान करना है । स्मरण रखिए पुस्तकें जाग्रत देवता हैं । उनके अध्ययन, मनन और चिंतन के द्वारा पूजा करने पर तत्काल ही वरदान पाया जा सकता है ।

पूज्यवर ने लिखा है-नवनिर्माण के लिए आवश्यक विचारधारा हमने अपने अंतरंग का निर्झर खोदकर प्रवाहित की है, उससे जन-जन के मन को सींचने का कार्य हमारे उत्तराधिकारी करेंगे । अखंड ज्योति हमारी वाणी है । हमारी आवाज अधिक लोगों तक पहुँच सके, इसके लिए अपने प्रभाव और दबाब का प्रयोग किया जाना चाहिए । यह भूलना नहीं चाहिए कि उसी के माध्यम से इतना बड़ा आंदोलन चलाया जा रहा है । जो इसे पढ़ते हैं वे ही हमारी प्रेरणाओं से परिचित होते और हलचल करते हैं । अखंड ज्योति ने जन साधारण को नई दिशा दी है, नए ढंग से सोचने को विवश किया है और हृदयंगम कराया है कि आदर्शवादी दर्शन अपनाकर ही हम आज की अनेकानेक गुत्थियों का हल निकाल सकते हैं, संकटों के अनेकानेक बंधनों से छुटकारा पा सकते हैं ।

उन्हें जन-जन के घर तक पहुँचाने और नियमित सत्संग, स्वाध्याय की आवश्यकता पूरी करने की दृष्टि से एक अनुपम, अद्‌भुत एवं अत्यंत आकर्षक ग्रंथ **"ऋषि चिंतन के सान्निध्य में"** प्रकाशित किया गया है, जिसमें सन् १९४० से १९६६ तक की अखंड ज्योति पत्रिकाओं से ऐसे अंश संकलित किए गए हैं जो आज के संत्रास के वातावरण में जी रहे निराश मानव को साहस, प्रोत्साहन एवं दिशा देने में सक्षम हैं । वर्तमान समस्याओं का हल करने वाली विचारधारा इनमें समाहित है ।

पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि अखंड ज्योति हमारी भावनाओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और विचारणाओं का दर्पण है । जिन्हें उसे पढ़ने में रुचि आकांक्षा न जग सकी, वे शरीर से हमारे समीप भले ही हों, पर भावनात्मक दृष्टि से हजारों कोस दूर हैं । इन विचारों को जो निरंतर पढ़ेगा, उसके जीवन में कोई आदर्शवादी परिवर्तन न हो, यह संभव नहीं है । यदि हमारी भावनाएँ ऊँची हैं, सजीव हैं, सशक्त हैं तो कोई कारण नहीं कि वे जहाँ पहुँचें, अपना रचनात्मक काम न करें ।

पूज्यवर ने लिखा है-दूसरों की तरह हमारे भी दो शरीर हैं । एक हाड़ माँस का और दूसरा विचारणा एवं भावना का । हाड़-माँस से परिचय रखने वाले करोडों हैं । भावना शरीर ही वास्तविक शरीर होता है । हम शरीर से जो कुछ हैं, भावना की दृष्टि से कहीं अधिक हैं । हम शरीर से किसी की जो भलाई कर सकते हैं, उसकी अपेक्षा अपनी भावनाओं और विचारणाओं का अनुदान देकर कहीं अधिक लाभ पहुँचाते हैं, पर अनुदान ग्रहण वे ही कर पाते हैं जो भावनात्मक दृष्टि से हमारे समीप हैं । जिन्हें हमारे विचारों से प्रेम है, जिन्हें हमारी विचारणा, भावना एवं अंत:प्रेरणा का स्पर्श करने में अभिरुचि है, उन्हीं के बारे में यह कहना चाहिए कि वे तत्त्वत: हमारे निकटवर्ती एवं स्वजन संबंधी हैं । उन्हीं के बारे में हमें कुछ विशेष सोचना है, उन्हीं के लिए हमें कुछ विशेष करना है । एक ही विचार हमारे मन में निरंतर घूमता रहता है कि जिस परिवार ने हमारे संकेतों पर बड़े से बड़े त्याग करने में कभी संकोच नहीं किया, जिधर मोड़ा उधर मुड़ते रहे, जो कहा सो मानते रहे और जिधर चलाया उधर चलते रहे हैं और उस पर भी लोकोत्तर सद्भाव परम् नि:स्वार्थभाव से प्रदान करते रहे हैं, उनसे उऋण हो सकना संभव न हो तो कम से कम समुचित प्रतिदान किस प्रकार दिया जाए ? हमें अपनी अंत:प्रेरणा, भावना, अभिव्यक्ति, आकांक्षा और शिक्षा अपने प्रेमी पाठकों के घरों में इस तरह छोड़ जानी है कि हमारा शरीर न रहने पर भी यह एक ज्योतिर्मय दीपक की भाँति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशवान बनी रहे । वे, उनकी संतानें और संतानों की पीढ़ियाँ उससे प्रकाश एवं प्रेरणा ग्रहण करती रह सकें । हमारा भावना शरीर हर प्रेमी परिजन के समीप एक मूर्तिमान कलेवर की तरह विद्यमान रह सकना संभव हो सके, तो जिस प्रकार हम आज वर्तमान शरीर द्वारा अपने प्रेमी पाठकों का भावनात्मक निर्माण करने में सफल हो रहे हैं । उसी प्रकार आगे भी सौ वर्ष तक उनके परिवार की, प्रियजनों की सेवा करते रहने का अवसर हमें मिलता रहेगा ।

पूज्यवर की उक्त आकांक्षा की पूर्ति हेतु आत्म निर्माण के लिए उनके चिंतन, मनन योग्य विचारों को सूत्र रूप में संकलित कर **"ऋषि चिंतन के सान्निध्य में"** ग्रंथ को चार सौ पृष्ठों में सँजोया गया है । यह शाश्वत चिंतन सभी धर्म एवं जाति के भाई बहनों के लिए जीवनोपयोगी है । इस ग्रंथ का विमोचन गुरुपूर्णिमा पर हो चुका है । इस ग्रंथ के प्रकाशन की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि जो भाई-बहिन स्वाध्याय में रुचि रखते हैं, लेकिन आत्म निर्माण के लिए सूत्रों को नहीं खोज पाते हैं वे प्रतिदिन एक विचार का स्वाध्याय करके उस पर चिंतन, मनन करें एवं आचरण में लाने का अभ्यास करें ताकि सद्विचारों के स्वाध्याय की परंपरा पुनः जाग्रत हो सके ।

क्या करें ? कैसे करें ?

गायत्री परिवार के सभी सदस्य, समर्थक, सहयोगी भाई बहनों के घरों में यह ग्रंथ स्थापित कराने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए, ताकि हर घर में परिवार के सभी सदस्य पारिवारिक गोष्ठी में एक विचार नित्य पढ़ें अथवा सुनें । परिवार के सभी भाई बहिन अपने रिश्तेदारों, मित्रों एवं परिचितों को प्रेरणा देकर यह ग्रंथ घर-घर में स्थापित कराने का प्रयास करें । प्रज्ञापुत्र, वानप्रस्थी, शाखा संचालक, युग सैनिक, बहनें एवं सहयोगी परिजन टोलियाँ बनाकर न्यूनतम दस-दस नवीन घरों में यह ग्रंथ स्थापित कराने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का प्रयास करें । अंतर्राष्ट्रीय गायत्री परिवार में से पूज्य गुरुदेव के विचार एवं भावना शरीर को विचारशील परिवारों में पहुँचाने के लिए एक लाख प्रचारकों की सेना गठन का लक्ष्य है, जो न्यूनतम दस-दस घरों में ग्रंथ को हीरक जयंती वर्ष में स्थापित कराने का दृढ़ संकल्प लेकर प्रयास में जुट जाएँ । दस ग्रंथ मँगाने के लिए ट्रांसपोर्ट खर्चा सहित १६००) रुपए भेजकर अपना आर्डर नोट करा दें । अधिक मँगाना आपकी श्रद्धा, निष्ठा, लगन और श्रमशीलता पर निर्भर है ।

समर्थ परिजन, भामाशाह और दानदाताओं से अनुरोध है कि ज्ञानदान से बढ़कर कोई दान नहीं है । व्यस्तता के कारण जिनके पास प्रचार करने के लिए समय नहीं है, वे अपने पूर्वजों की पुण्य स्मृति में अथवा मांगलिक अवसरों के उपलक्ष में अधिकाधिक दान देकर इस ग्रंथ को अपने क्षेत्र के अल्प आय वाले परिवारों में आधे मूल्य पर स्थापित कराने में सहयोगी बन सकते हैं । सक्रिय शाखाएँ ऐसे भामाशाहों से अनुदान राशि एकत्र कर नाम पते के साथ ब्रह्मभोज (ज्ञानयज्ञ) के लिए अनुदान राशि भेज दें । उसी शाखा को राशि के अनुसार आधे मूल्य पर ग्रंथ भेजने की व्यवस्था बना दी जाएगी । यदि दान दाता अपने यहाँ आधे मूल्य पर वितरण नहीं कराना चाहेंगे तो केन्द्र द्वारा अन्य स्थानों पर वितरण की व्यवस्था बना दी जाएगी । दानदाताओं के सहयोग से अपने क्षेत्र के स्कूल, कालेजों में यह ग्रंथ इस अनुरोध के साथ स्थापित कराए जाएँ कि प्रार्थना के समय प्रतिदिन एक पृष्ठ छात्रों को सुना कर सद्विचारों की प्रेरणा दी जाएगी । प्रतियोगिताओं में पुरस्कार स्वरूप तथा व्यवसायी और कंपनी मालिक अपने ग्राहकों, एजेन्टों को उपहार स्वरूप यह ग्रंथ दे सकते हैं । समर्थ परिजन अपनी पूँजी से अधिक ग्रंथ मँगा कर बेरोजगार अथवा अवकाश प्राप्त परिजनों के सहयोग से केंद्र द्वारा मिलने वाली छूट पारिश्रमिक के रूप में देकर प्रत्येक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org